विकसित भारत लक्ष्य @2047 में नई मीडिया की प्रत्याशित भूमिकाएँ

शशांक त्रिपाठी[1] , डॉ. ममता उपाध्याय[2]

[1] शोध छात्र , [2] प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

कुमारी मायावती राजकीय महिला महाविद्यालय , गौतम बुद्ध नगर , उ.प्र.

संबद्ध - चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय , मेरठ , (उ.प्र.) , भारत

शोध सारांश : एक समय था , जब भारत को अपने नागरिकों के भोजन हेतु विदेशों से गेंहू आयात करना पड़ता था और आज एक समय है कि , विश्व ने रूस - युक्रेन युद्ध में गेंहू संकट के समय भारत की ओर देखा | समय की परिवर्तनशीलता क्या होती है , इसको भारत ने प्रत्यक्ष रूप में प्रमाणित कर दिया | कभी संपेरो का देश कह कर भारत का मजाक उड़ाने वाले पश्चिमी विश्व , आज किसी भी मुद्दे पर भारत की राय को महत्व देते है | अब हम भारतीयों ने आजादी के 100 वें साल में देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा करने का लक्ष्य रखा है , जिसे साकार करने के लिये पूरा देश एकजुट है | इस लक्ष्यपूर्ति में एक बड़ी भूमिका संचार तकनीकों की होने वाली है , क्योंकि वर्तमान विश्व में सूचना ही धन माना जा रहा है | इस सूचना क्रांति के दौर में नई मीडिया एक बहुत बड़े खेल परिवर्तक के रूप में है | जिसके माध्यम से न केवल सरकार जनता तक सूचनाएं पहुँचाती है , बल्कि जनता भी अपनी माँगे सरकार के समक्ष रख रही है | प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि लक्ष्य @2047 में नई मीडिया किस प्रकार की भूमिकाओं में उपस्थित हो सकती है |

परिचय : देश का एक मत जो यह मानता है कि भारत को टुकड़ो में इसलिये ही तोडा गया क्योंकि ब्रिटेन को डर था कि विस्तृत भारत कहीं उनसे आगे न निकल जाये | परन्तु हम भारतीयों ने अपने आत्मबल का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करते हुए खुद को इतना सक्षम बनाया कि आज हम दुनिया की तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में से एक हैं | आजादी के 75 वें साल में हम ब्रिटेन को पछाड़ कर विश्व की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं और हमारा लक्ष्य जल्दी ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का है | भारत के 14 वें प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी ने आजादी के 75 वें साल में अपने उद्बोधन में , भारत को आजादी के 100 वें साल में एक विकसित राष्ट्र के रूप में पहचाने जाने की बात कही , जो एक वक्तव्य से सरकार का लक्ष्य और हम भारत वासियों का सपना बन गया है | विकसित भारत , हम भारतवासियों के लिए केवल एक लक्ष्य नहीं अपितु सम्मान का भी विषय है | विकसित देश की श्रेणी में शामिल होने के लिए आज की तकनीकी

दुनिया में , केवल बड़े उद्योग - धंधे , अच्छी सड़के , बड़ी सेना , पेटभर अनाज पैदा करना ही पर्याप्त नहीं है , अपितु इसके साथ ही इन सभी में आधुनिकतम तकनीकी का प्रयोग भी होना चाहिए |

आधुनिक तकनीकों ने मानव जीवन को सरल और सुगम बना दिया है | आज तो विज्ञान ने ऐसे यन्त्र बना लिए हैं जो मंगल गृह से पृथ्वी तक तस्वीरों का सन्देश भेज सकते है | इस सूचना क्रांति के तूफान ने , न केवल मानवीय जीवन के हर पहलू को छुआ है बल्कि राज्य के भी हर कार्य को प्रभावित किया है | अभी तक सरकारे स्वयं के निर्णय के आधार पर नीतियों का निर्माण करती थी और लागू कर दिया जाता था | परन्तु अब समय के परिवर्तन के साथ ही सरकारे जनता की मांग पर कानून / नीतियों का निर्माण करने की दिशा में भी अग्रसर हो रही हैं | पूर्व में जनता सरकार तक अपनों माँग को आन्दोलन के माध्यम से रखती थी लेकिन तकनीकी विकास ने इस प्रक्रिया को भी उन्नत बना दिया है |अब जनता सरकार के समक्ष अपनी मांगे केवल आन्दोलन व प्रिंट मीडिया के माध्यम से नही बल्कि इन्टरनेट के माध्यम से भी रखने लगी है | इस दिशा में न्यू मीडिया का बहुत योगदान है जिसने पुरे देश या पूरे विश्व को एक समान्तर रेखा में खड़ा किया है |

विकसित भारत लक्ष्य : किसी राष्ट्र को विकसित माने जाने के सामान्य मापदंडो में , उसका उच्च औद्योगिककृत होना , वहाँ के नागरिकों का जीवन उच्च गुणवत्ता युक्त हो , उसकी अर्थव्यवस्था विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखती हो , उच्च तकनीकी वाला समाज और देश की अवसंरचना बेहतर स्थिति में हो , आदि है | परन्तु वैश्विक व्यवस्था में विकसित देश का तमगा पाने का कोई निश्चित परिभाषा नही है | संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके संगठन भी अपने प्रपत्रों व प्रकाशनों में विकसित अथवा विकासशील देश जैसे उपमा के स्थान पर उच्च आय , निम्न आय , मध्यम आय वाले देश जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं |

इसीलिए भारत ने भी निम्नलिखित मुद्दों को आधार मानकर अपना लक्ष्य निर्धारित किया है -

1. **आर्थिक विकास** - भारतीय अर्थव्यवस्था आज के समय पीपीपी (परचेजिंग पॉवर पैरिटी) के आधार पर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है , जबकि बाजार के विनियम दर के अनुसार 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है | विश्व में छिड़े संघर्षो , तनाव और कोरोना जैसी महामारी के बाद भी हमारी अर्थव्यवस्था में तेजी से बढ़ी है , साल 2022 - 23 में अग्रिम जी.डी.पी. अनुपात लगभग 7 % है , साल 2023 में इसने 3.73 ट्रिलियन डॉलर का मुकाम छू लिया | दुनियाभर की रेटिंग एजेंसीयों ने भारत को सबसे तेजी से बढ़ती हुए अर्थव्यवस्था माना है | इसी आधार पर विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने के लिए , भारत ने इसे 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है |

2. **सामाजिक उन्नति :** किसी भी देश को विकसित तब तक नही माना जा सकता है जब तक उसके समाज में समस्यायें दानव की तरह मुहँ खोले खड़ीं हो | विकसित कहे जाने के लिए भारत को अपने समाज में व्याप्त समस्याओं से निपटना होगा | बेरोजगारी , अशिक्षा , भ्रष्टाचार , नशाखोरी , बाल श्रम , दहेज़ प्रथा , अपराध , जातिवाद , क्षेत्रवाद आदि , भारतीय समाज में अन्दर तक बैठी समस्यायें हैं | इन्हें एकदम से मिटाया तो नही जा सकता , परन्तु इनको न्यूनतम स्तर पर लाकर देश में सामाजिक उन्नति की दिशा में मिल का पत्थर स्थापित करना है |
3. **निम्नतम गरीबी :** सम्पूर्ण विश्व में गरीबी एक भयावह समस्या है और भारत भी इसे अछूता नहीं है | भारत में गरीबी के प्रमुख कारणों में बढ़ती जनसँख्या , बेरोजगारी , अनौपचारिक क्षेत्रों के रोजगार जो निश्चित समय व निश्चित वेतनमान के नहीं होते , आदि है | अक्सर ही देखा जाता है कि गरीबी अपराध को जन्म देने वाले कारणों में शामिल रहती है | इसलिए विकसित भारत लक्ष्य में गरीबी का पूर्ण निवारण शामिल है |
4. **पर्यावरण की रक्षा :** मानव का रक्षण तभी संभव है , जब पर्यावरण बचा रहेगा | वर्तमान विश्व पर्यावरणीय समस्या से जूझ रहा है , विश्व का कोई भी देश इससे अछूता नही है | भारतीय संस्कृति सदा से ही पर्यावरण संरक्षण को पोषित करती रही है , परन्तु विकास की अंधी दौड़ में अब तक पर्यावरण को बहुत क्षति पँहुची है | इसलिए अब भारत सतत विकास की राह अपनाते हुए पर्यावरण संरक्षण पर जोर देगा , जिसे सम्पूर्ण विश्व का भला हो सके |
5. **उन्नत आधारभूत ढांचे :** किसी देश के विकास में सबसे बड़ा योगदान आधारभूत ढांचे का होता है , बिना इसके देश की उन्नति संभव नही है | आज भारत तेजी से विश्व स्तरीय बुनियादी ढाँचा निर्माण में लगा है , विश्व की नवीनतम तकनीकी से सड़को का जाल बिछाया जा रहा है , पूरे देश में रेल कनेक्टिविटी बढ़ रही है , रेलवे स्टेशन पर हर तरह की सुविधा दिए जाने का प्रयास किया जा रहा है | हवाई अड्डे को आधुनिकतम तकनीकी से लैस किया जा रहा है , छोटे शहरो तक हवाई पँहुच के लिए प्रयत्नशील है | कार्गो सपोर्ट , लोगिस्टिक सपोर्ट , तेज इन्टरनेट , सभी को शुध्द जल आदि आधारभूत चीजें विकसित भारत लक्ष्य को संभव बनायेंगी |
6. **सुशासन :** भारत में प्राचीन काल से ही शासन की अवधारणा सुशासन का पालन करती है , तब प्रजा रंजन ही शासन का केंद्र था | समय के साथ शासन में प्रजा का स्थान जनता ले लिया है पर अभी भी जनता की भलाई ही सरकार का उद्देश्य है | भारत में अभी भ्रष्टाचार , जन भागीदारी , कानून का शासन , जवाबदेहिता , पारदर्शिता , ई - गवर्नेंस , पुलिस सुधार , नागरिकों की आपातकालीन सुरक्षा जैसे मुद्दे पर काम करने की जरुरत है |

7. **सभी के लिए उच्च स्वास्थ्य सुविधा :** देश में हर वर्ग के लिये सस्ती , विश्व स्तरीय व उच्च चिकित्सा सुविधा की उपलब्धता होनी जरुरी है | क्योंकि कोई भी राष्ट्र कमजोर मानव संसाधन के साथ प्रगति नही कर सकता | देश में उच्च स्तरीय सुविधाए तो उपलब्ध है परन्तु अभी ये केवल संपन्न वर्ग के लोगो को ही प्राप्त हैं , इसे देश के गरीब तबके तक पंहुचाना सरकार का लक्ष्य है |
8. **न्याय प्रणाली में प्रभाविता :** भारतीय न्याय व्यवस्था में न्याय मिलने में देरी एक बहुत बड़ा मुद्दा है | आज भारतीय न्यायालयों में लगभग 3 करोड़ से ज्यादा मुकदमे लंबित है , जिनके पीछे कठिन न्याय प्रणाली , न्यायाधीशों की कम संख्या , पुलिस की कम सक्रियता आदि कारक है | विकसित भारत में न्याय की प्रकिया सभी के लिए सरल और सुलभ होनी चाहिए |

इन उल्लेखित क्षेत्रों के अतिरिक्त अधिकतम हरित उर्जा उपभोग , कृषि सुधार , “सूक्ष्म , लघु एवम् मध्यम उद्योगों” को बढ़ावा , नवाचार को पोषण , वैश्विक शक्ति बनने की कोशिश , अनुसन्धान को बल , शिक्षा सुधार , स्वरोजगार को बढ़ावा , संतुलित क्षेत्रीय विकास , निर्यात को बढ़ाना आदि भी शामिल हैं | प्रधानमंत्री द्वारा इस विकसित भारत लक्ष्य के चार स्तम्भ (पिलर) बताये गए हैं - युवा , गरीब , महिलायें , अन्नदाता (किसान)

न्यू मीडिया : इंसानों को कबूतरों से सन्देश पँहुचाने के समयकाल से रेडियो और टेलीविज़न को संदेशों का माध्यम बनाने में एक लम्बा समय लगा | परन्तु एनालॉग प्रसारण के इन माध्यमों से आगे बढ़कर डिजिटल माध्यमों तक का सफ़र मानव ने बहुत कम समय में तय कर लिया | डिजिटल माध्यमों के आधार वितरक के रूप में कंप्यूटर और इन्टरनेट ने नई मीडिया को जन्म दिया | नई मीडिया , वह सूचना सामग्री है , जो इन्टरनेट पर आधारित होती है जिसे हम किसी भी समय त्वरित रूप में प्राप्त कर सकते हैं | इस तक , किसी भी डिजिटल उपकरण की सहायता से विश्व के किसी भी कोने में जहाँ इन्टरनेट की मौजूदगी हो , पँहुचा जा सकता है | यह केवल प्रयोगकर्ता को आसान पँहुच ही नहीं , अपितु सामग्री का उत्पादन करने , संचित करने , प्रकाशित करने , सम्पादित करने , सामग्री में संशोधन करने और इस पर प्रतिक्रिया की अनुमति भी प्रदान करता है | न्यू मीडिया के सामान्य उदाहरणों में फेसबुक , वाट्सअप , वेबसाइटस् , ट्वीटर (एक्स) , स्नैपचैट , टेलीग्राम , लिंकडन , यूट्यूब , डीवीडी , सीडी , इन्स्टाग्राम विकिपीडिया , ऑनलाइन न्यूज़ पेपर , ब्लॉग , पाडकास्ट , टिकटाक आदि हैं | नयी मीडिया की सबसे बड़ी खासियत इसके परस्पर संवाद का गुण है , जो व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ता है , बिना किसी प्रत्यक्ष संपर्क के , बिना देश की सीमाओं के बाधा के , बिना भौगौलिक दूरी के मायने के | यह दुनिया भर की इंसानों को किसी भी विषय पर बोलने , लिखित विचार साझा करने , दुसरे के विचारों पर टिप्पणी

करने , चर्चा करने की सुविधा प्रदान करता है | मार्शल मैक्लुहान द्वारा पिछली सदीं के 6वें दशक में दी गयी वैश्विक गाँव की परिकल्पना को , नयी मीडिया ने लगभग सच कर दिया है , साथ ही इसने डेटा को अमरता प्रदान की है | नई मीडिया की सबसे सरल समझ यह हो सकती है कि सूचना , संवाद का वह मंच जो इन्टरनेट सुविधा और कंप्यूटर , मोबाइल जैसे उपकरणों पर आधारित होता है |

नई मीडिया के विकसित भारत लक्ष्य में संभावित लाभ : नयी मीडिया और डिजिटल मीडिया को " दो जिस्म एक जान " जैसे मुहावरों से देखा जाना झूठ न होगा , क्योंकि दोनों का ही आधार इन्टरनेट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं | नयी मीडिया ने दोतरफा संचार के अवसर देकर बहुत बड़ा बदलाव लाया है , इसने त्वरित दर्शक भागीदारी और सक्रीय दर्शक सिद्धांत को पुनः जीवित कर दिया है | इसके प्रभाव क्षेत्र में पारंपरिक मीडिया के गढ़ भी आ चुके हैं , जैसे - राजनीति , शासन और व्यापार | लोगों को जोड़ने वाले इस नेटवर्क ने संवाद , सामाजिकता , व्यापार , शिक्षा और मनोरंजन करने के पध्दतियों में तब्दीली कर दी है | अपनी इन्ही खूबियों की वजह से भारत की विकास यात्रा में इसके निम्नलिखित योगदान हो सकते हैं -

- **सूचना प्रसार व जागरूकता बढ़ाने हेतु** : नई मीडिया के उपयोग के आसान तरीके ने इसकी पँहुच हर आयु और हर वर्ग बना दी है | कोई भी कहीं से इसको एक्सेस कर सकता है , इन्टरनेट सुविधा के साथ | इसकी इस खासियत का सबसे बड़ा लाभ लोगों तक कोई भी सूचना पंहुचाने में हो सकती है | सरकारों को अनेकों सूचनाएँ , जानकारी नागरिकों तक पहुँचानी होती हैं , जो इसके माध्यम से तात्कालिक रूप में भेजी जा सकती हैं | सरकार वर्तमान में बहुत सारे सार्वजनिक विषयों , विकासात्मक योजनाओं , सरकारी पहल आदि पर तवरित और विस्तृत सूचना इन्ही के माध्यम से जनता तक पँहुचा रही है और उसकी भी प्रतिक्रिया प्राप्त कर रही है | नागरिकों के बीच सरकार की यह आसान पँहुच उन्हें सरकारी योजनाओं के , देश की समस्याओं , विदेशी संबंधो आदि के प्रति जागरूक भी करती है |
- **नवोन्मेष और स्टार्टअप को बढ़ावा :** डिजिटल मीडिया युवकों में नवीनता और उद्यमशीलता को पंख देने का काम कर रही है | युवा , विदेश में खोजी गयी किसी नयी तकनीकी की सूचना नई मीडिया के माध्यम से जान जाते हैं , फिर इसी माध्यम से उस खोजकर्ता / कंपनी से संपर्क करके तकनीकी प्राप्त करते हैं और उस पर आधारित स्टार्टअप शुरू करते हैं | कई बार युवा उसी तकनीकी को स्वदेशी रूप में कम लागत में ईजाद कर देते हैं | दोनों ही प्रकार , भारत के लिए आर्थिक तौर पर लाभकारी हैं | इन प्लेटफोर्मस् से ही उत्पाद के लिए कम लागतयुक्त मार्केटिंग के साथ ही निवेशकों से जुड़ने का अवसर भी मिल जाता है |

- **नागरिक भागीदारी और संवाद :** नई मीडिया की सबसे बड़ी खूबी के तौर पर इसका दोतरफा संवाद का होना है | इसी कारण यह केवल सरकार द्वारा सूचना और जागरूकता हेतु ही नहीं अपितु जनता को भी देश के लिए नीति निर्धारण में सक्रिय रूप से शामिल होने और अपनी राय सरकार तक पँहुचाने का अवसर देती है | जो एक समावेशी दृष्टिकोण को प्रेरित करता है , जिससे नीति निर्माण और विकास में सार्वजानिक सुझाव शामिल किये जा सकेंगे ||
- **पारदर्शी शासन और ई - गवर्नेंस :** सरकारी की लगभग सभी सेवायें , निविदायें , सिटिज़न चार्टर और शिकायत निवारण तंत्र की भी पूरी जानकारी न्यू मीडिया के प्लेटफोर्म्स पर उपलब्ध रहती है | न्यू मीडिया ने पुराने समय के बंद कमरे में टेंडर जारी होने के खेल को ख़त्म कर दिया, जो अक्सर ही भ्रष्टाचार को गले लगाता था | न्यू मीडिया , शासन में पारदर्शिता लाकर भ्रष्टाचार कम करने में सहायक है | नयी मीडिया की मदद से नागरिक सार्वजानिक सेवाओं का अधिक कुशलता से प्रयोग कर सकते है साथ ही मीडिया प्लेटफोर्म पर अपनी शिकायत सीधे सम्बंधित मंत्री या विभाग को दर्ज करा सकते हैं |
- **शिक्षा और कला विकास :** न्यू मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने ऑनलाइन शिक्षा और प्रशिक्षण के बहुत से विकल्प उपलब्ध कराये हैं | इसके द्वारा दूरस्थ शिक्षा व मुक्त विश्व विद्यालय जैसे शिक्षण पध्दतियों में बहुत बड़ा योगदान दिया जा सकता है | भारत सरकार के “स्वयं” और “स्वयं प्रभा” जैसे कार्यक्रम इसके उदाहरण हैं | इसके द्वारा शिक्षक रेगुलर पाठ्यक्रमों में भी नयी प्रविधियों के प्रयोग से छात्रो में सीखने की रूचि पैदा कर सकते हैं , जैसे - किसी ज्वालामुखी की क्रियाविधि यूट्यूब के माध्यम से समझाना | आने वाले समय में गुणवत्ता युक्त शिक्षा और कौशल के विकास में नयी मीडिया का बहुत बड़ा हाथ होगा |
- **आर्थिक विकास और डिजिटल समावेशन :** हाल ही में भारत सबसे तेजी से यू.पी.आई. अपनाने वाला देश बन गया है , आज देश में हर दिन करोड़ो ट्रांजेक्सन ऑनलाइन मध्यम से किये जा रहे हैं , जो डिजिटल समावेशन का बढ़िया उदाहरण है | इसके साथ ही ऑनलाइन फ्रॉड भी बढ़ गया है , जिसे रोकने में नई मीडिया ही सबसे ज्यादा मददगार साबित हो सकती है | सी.बी.आई. , आर.बी.आई. और बैंक जैसे संस्थाए प्रतिदिन डिजिटल साक्षरता बढ़ाने के लिए नई मीडिया के प्लेटफोर्म पर जनता को जागरूक व सचेत करती हैं | इसके माध्यम से ई -कॉमर्स , डिजिटल पेमेंट , ऑनलाइन बैंकिग प्रणालियों का उपयोग अर्थव्यवस्था को रफ़्तार देते है |
- **संस्कृति की रक्षण और प्रसार** : नई मीडिया , भारत की संस्कृति , परम्परा , धरोहरों को हर वर्ग तक पँहुचाने का काम कर रही है | डी.डी. नेशनल पर आने वाला कार्यक्रम “ उपनिषद् गंगा ” आज यूटयूब पर उपलब्ध है , यह तो केवल एक उदाहरण मात्र है ऐसे अनगिनत जाने कार्यक्रम , ग्रन्थ , श्लोक ,

पुस्तकें नई मीडिया के प्लेटफोर्म पर अपलोड हो चुकी हैं और अभी भी अपलोड की जा रही हैं | जिनसे युवा और बालक वर्ग अपनी संस्कृति को समझ सकता है और उसकी रक्षा करने को तत्पर होगा | केवल देश ही नही अपितु विदेश में भी इस प्रकार भारतीय संस्कृति का प्रसार हो सकता है | हर साल करोड़ो विदेशी इसी मीडिया से जानकरी प्राप्त करते हैं , फिर स्वयं काशी और मथुरा आकर भारतीय संस्कृति को जानने का प्रयास करते है | नई मीडिया भारतीय संस्कृति के प्रसार का मुख्य साधन हो सकता है |

- **विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सुविधा :** नई मीडिया के प्लेटफोर्मस् स्वास्थ्य सुविधा प्राप्ति की दृष्टि से भी उपयोगी सिध्द हो सकते हैं | वर्तमान समय में भी कई बार विदेश में बैठा स्पेशलिस्ट डॉक्टर नई मीडिया के किसी प्लेटफार्म से दिल्ली में बैठे मरीज से समस्या पूछ कर ऑनलाइन ही उसे उपलब्ध समाधान निर्देशित करता है | आने वाले समय में , इस प्रकार की विश्वस्तरीय सुविधा नागरिक अपने घर में बैठे प्राप्त कर सकेंगे , जो नई मीडिया के बिना संभव नहीं है |
- **महिलाओं के प्रति अपराध पर अंकुश :** नई मीडिया के अंतर्गत आने वाले बहुत से प्लेटफोर्म ने अपने एप्लीकेशन में पैनिक बटन का विकल्प देना शुरू कर दिया है , जिसक उपयोग आपातकालीन स्थिति में किया जाता है | इसका प्रयोग करते ही उपयोगकर्ता की तत्कालीन लोकेशन नजदीकी पुलिस थाने व उसके घर वालो को पँहुच जाती है , जिसे उस तक पंहुचना आसन हो जाता है | भविष्य में महिला अपराध के विरुध्द यह एक मजबूत हथियार साबित हो सकता है | जब महिलायें सुरक्षित होंगी , तभी भारत विकसित हो सकता है |
- **सामाजिक आन्दोलन को आधार :** न्यू मीडिया ने नव सामाजिक आन्दोलनों के लिए समर्थक वर्ग का नया आधार उत्पन्न किया है | धर्म / जाति / वर्ग की दीवारों को तोड़ कर समान विचारधारा वाले लोगों को एक साथ लाने का काम किया है , जो किसी आन्दोलन के लिए समर्थक बनते है | “अरब स्प्रिंग” , अन्ना हजारे का लोकपाल बिल आन्दोलन , ब्लैक लाइफ मैटर आन्दोलन आदि नई मीडिया के बदौलत ही सफल हुए है , एक प्रकार से नई मीडिया नव सामाजिक आंदोलनों के लिए रीढ़ है |
- **लोकतंत्रीकरण को नए आयाम :** लोकतंत्र के सबसे बड़े गहने के रूप में अभिव्यक्ति की आजादी को माना जाता है | न्यू मीडिया के आसन पँहुच ने सभी को अपनी बातें रखने का मौका दिया है , सभी अपनी आवाज सरकार तक आसानी से पँहुचा सकते हैं और सरकार का विरोध भी कर सकते हैं | लोकतंत्र में विरोध का भी विशेष महत्व है , नई मीडिया आमजन की आवाज बन कर लोकतंत्रीकरण को नए आयाम दे सकती है |
- **ब्लॉग पत्रकारिता :** इन्टरनेट के अविष्कार के पूर्व प्रिंट मीडिया में लेख लिखे जाते रहे हैं ,कभी - कभी ये जनता के बीच पँहुचने से पहले ही प्रभावशाली लोगो द्वारा सत्य से भटका दिए जाते थे | टेलीविज़न

मीडिया भी इस से बच नही पाया और इस पर भी फायदे के अनुसार रिपोर्टिंग की जाने लगी है | परन्तु आज नई मीडिया ने ब्लॉग पत्रकारिता को जन्म दे दिया है , जो किसी व्यक्ति या छोटे समूह द्वारा संचालित होते है | ये जमीनी स्तर पर रिपोर्टिंग करते हैं , जो सच के करीब होता है | इस वजह से मुख्य धारा के मीडिया खबरों को तोड़ - मरोड़ नहीं करते और हर चैनल ज्यादा से ज्यादा विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी लेकर दिखता है | भारत की इतनी बड़ी जनसँख्या के लिए ऐसी पत्रकारिता छोटी व महत्वपूर्ण खबरों को सबके सामने लाने और मुख्य मीडिया को सच दिखाने के लिए प्रेरित करने का बेहतरीन साधन हो सकता है |

- **हाशिये के लोगों को पहचान बनाने के मौके :** सोशल मीडिया ने अब तक हाशिये पर रहे लोगों को स्वयं की पहचान बनाने का मौका दिया है | ट्रांसजेंडर , गे , लेस्बियन व तृतीय लिंग के लोग खुल कर अपनी पहचान उजागर कर रहे हैं और लोगों द्वारा स्वीकार भी किये जा रहे हैं | इस प्रकार यह सामाजिक न्याय को बढ़ावा देता है , जो विकसित भारत के लिए अति आवश्यक है |

संभावित नकारात्मक योगदान : विज्ञान की प्रगति ने सदैव ही मानव जीवन को सुखकारी बनाने का कार्य किया है परन्तु यह आधा सच है | क्योंकि विज्ञान के हर अविष्कार ने यदि मानव जीवन में लाभ दिए हैं तो कुछ नुकसान भी दिए हैं | नई मीडिया ने पुराने पारंपरिक मीडिया के गेट कीपर और खबरों की सत्यता जानकर प्रकाशित करने जैसे गुणों को दरकिनार करने का काम किया है | इसने इन्टरनेट की पँहुच वाले हर मानव को लेखक , संपादक , पत्रकार व संग्राहक बना दिया है | इसमें गेट कीपिंग की अनुपस्थिति ने हर जानकारी को हर उम्र वर्ग के लिए सुलभ कर दिया है , जो प्रतिबंधो में रखी जा रही सूचना को भी सभी के लिए खोल देता है , जो कभी भी घातक नतीजो में परिवर्तित हो सकता है | इस प्रकार न्यू मीडिया ने मानव जीवन को अनेकों लाभ दिये है , पर इसके साथ ही कुछ हानियाँ भी मानव जीवन में प्रवेश कर गयी हैं -

- **निजी जानकारी में सेंध :** लोगों द्वारा नई मीडिया का उपयोग करने के दौरान कई प्रकार की व्यक्तिगत जानकरी , जैसे - मोबाइल नंबर , बैंकिंग विवरण आदि , परिचय के लोगों से साझा की जाती है | यह निजी जानकारी हैकर के द्वारा चोरी करके गलत उपयोग में लायी जाती है | इस डेटा के सहारे हैकर , कभी बैंक से पैसे निकाल लेते हैं तो कभी फोटोशॉप से अश्लील फोटो बना कर मान हानि करते हैं |
- **फर्जी खबर :** नई मीडिया के सहारे कोई भी खबर बंदूक की गोली की रफ़्तार से फैलती है | किसी खबर की सत्यता का पता जब तक लगता है , वह दुनिया भर में फ़ैल चुकी होती है | सही खबरों के साथ - साथ मीडिया में फर्जी खबर भी चलती है , जो लोगो को गलत जानकारी उपलब्ध कराती है | इससे

लोगो की मनोदशा पर प्रभाव पड़ता है और उनके व्यक्तिगत जीवन व सामाजिक जीवन से जुड़े निर्णय भी प्रभावित होते हैं | मॉब लिंचिंग जैसी घटना , फर्जी खबर का ही एक दुखद परिणाम है |

- **मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव और नशे की लत :** भारतीय दर्शन में वर्णित "अति सर्वत्र वर्जयेत" का सिध्दांत न्यू मीडिया के सन्दर्भ में भी लागू होता है | न्यू मीडिया के अत्यधिक उपयोग की लत व्यक्ति के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है | कई बार व्यक्ति इन मीडिया प्लेटफार्म पर उपस्थित दूसरो से अपनी तुलना करता है , उनके जैसा बनना चाहता है और यह स्थिति उन्हें तनाव व अवसाद की ओर ले जाती है | कुछ व्यक्ति तनाव से निजात पाने के लिए नशे का सहारा लेते है , जो खुद में नुकसानदेह होता है |
- **वास्तविक दुनिया से अलगाव और एकाकीपन :** नई मीडिया प्लेटफोर्मस् पर लोग इतना ज्यादा समय बिताने लगते हैं कि वे अपने आस - पास की दुनिया से कट जाते हैं | घर के एक कमरे में बैठे लोग भी अपने - अपने मोबाइल में व्यस्त रहते हैं , खाने की टेबल पर भोजन के साथ आधा ध्यान सोशल मीडिया पर रहता है | इस तरह से व्यक्ति आभासी दुनिया में ज्यादा समय व्यतीत करने लगता है और वास्तविक जीवन में परिवार , मित्रो व रिश्तों से दूर हो जाता है , जो एक समय बाद एकाकीपन में बदल जाता है |
- **डिजिटल विभाजन :** आज भी भारत के बहुत से गाँवो में बिजली की पर्याप्त पँहुच नहीं है , पक्की सड़के नही है , विद्यालय नही है | ऐसी अवस्था में वहाँ तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता की बात एक मजाक होगी | ग्रामीण और कमजोर पृष्ठभूमि के लोगों के लिए आधारभूत सुविधाएँ ज्यादा जरुरी हैं | एक तरफ ऐसे गाँव है और दूसरी ओर गुरुग्राम जैसे शहर , यह स्थिति "भारत और इंडिया" की संकल्पना को परिभाषित करती है तथा डिजिटल विभाजन दर्शाती है |
- **साइबर क्राइम :** न्यू मीडिया के उपयोग बढ़ने के साथ ही इन्टरनेट पर होने वाले साइबर क्राइम का स्तर भी बढ़ गया है | साइबर अपराध , जरामय की दुनिया का वह नया तरीका है जहाँ अपराधी को सामने आकर प्रत्यक्ष रूप से आपको चोट पहुचाने की जरुरत न रहती है | अपराधी , आपसे हज़ारों किलोमीटर दूर बैठ कर आपके खाते से पैसे उड़ा सकता है , आपका फोन से निजी जानकारी निकाल कर आपको ब्लैकमेल कर सकता है अथवा सामाजिक जीवन में आपकी छवि धूमिल कर सकता है |
- **मुद्दों से ध्यान भ्रमित करना :** कई बार सोशल मीडिया पर सनसनीखेज खबरों या घटनाओं को ज्यादा स्थान दिया जाता है , हर जगह वही खबर चर्चा का केंद्र बन जाती है | परन्तु असल में उस खबर को , किसी वास्तविक मुद्दे या समस्या से जनता का ध्यान भटकाने के लिए किया गया होता है | इस वजह से जनता विकासात्मक योजनाओं व असल समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित नही कर पाती है |

- **सामाजिक विसंगति और संघर्षों को बढ़ावा :** कुछ लोग समाज में फैली विसंगतियों को सही बता कर प्रसारित करते हैं , जैसे - अपनी जाति को श्रेष्ठ और दूसरे की जाति को निकृष्ट बताना | अक्सर ही न्यू मीडिया पर विभिन्न सम्प्रदायों , संस्कृतियों और समुदायों के बीच वैमनस्य वाली खबरों को बहुत हवा दी जाती है | जो संस्कृतियों के बीच अविश्वास , मतभेद और तनाव का कारण बनता हैं और संघर्ष को बढ़ावा देता है |
- **उपभोक्तावाद को बढ़ावा :** नयी मीडिया किसी उत्पाद के प्रचार के सस्ते साधन के तौर पर उभरा है , इस पर आने वाले विज्ञापन इतने लुभावने होते हैं कि कई बार व्यक्ति बिना जरुरत के भी उत्पाद को खरीद लेता है | यह दृष्टिकोण उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ाता है , जिसे आर्थिक व सामाजिक असमानता बढ़ सकती है , साथ ही संसाधनों की बर्बादी भी होती है | जो मानव की दीर्घकालिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है |

निष्कर्ष : विज्ञान के अन्य अविष्कारों की भांति ही नई मीडिया के अन्दर भी समाज के लिए सृजनात्मक और विध्वंसकारी दोनों ही प्रकार की शक्ति है | हाल ही में कोलकाता में डॉक्टर से हुए रेप और हत्या के बाद , इस सामाजिक मुद्दे पूरे देश में विरोध प्रदर्शनों में न्यू मीडिया मददगार रहा , उसके बाद , विकसित भारत में इसकी उपयोगिता को ख़ारिज नही किया जा सकता है | केवल विरोध प्रदर्शन ही नहीं बल्कि सरकारों को सुझाव देने में भी नई मीडिया ने बढ़ - चढ़ कर साथ दिया है , ये नागरिक भागीदारी की दशा सुधारने में भी उपयोगी भूमिका निभा रहा है | जैसे - वक्फ संशोधन बिल पर संयुक्त संसदीय समिति को ई मेल के माध्यम से लगभग 84 लाख सुझाव प्राप्त हुए है , जबकि लिखित रूप में 70 बाक्स सुझाव मिले है | कोरोना काल में शिक्षा के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता जगजाहिर रही है | ऐसे लाखों उदहारण दुनिया में भरे पड़े हैं जहाँ नई मीडिया प्लेटफोर्म ने समाज में , देश में सकारात्मक बदलाव लाये है | परन्तु इसी के साथ इसका दूसरा पक्ष भी देखना जरुरी हो जाता है , जहाँ इसने तमाम दुश्वारियों को भी बढ़ा दिया है | कश्मीर में अलगाववादी नेताओं ने युवाओं में हिंसा भड़काने और युवाओं को पत्थर बाजी के लिए एकत्र करने के लिए बखूबी इसका इस्तेमाल किया | इसी के जरिये कुछ लोग समाज में अश्लील कंटेंट का प्रसार तेजी से कर पाते है , कभी किसी के निजी अन्तरंग पलो को वायरल कर दिया जाता है , कभी महिलाओ की नकली अश्लील छवि बना कर उनके सम्मान को ठेस पंहुचायी जाती है | फेक न्यूज़ और उस वजह से फैलती वैमनस्यता , मॉब लिंचिंग जैसे अपराध से हम सभी वाकिफ है | संक्षेप में कहे तो नई मीडिया उस चाकू के समान है , जो बावर्ची के हाथ में होने पर सब्जी कटाने के काम में आयेगा और एक अपराधी के हाथ में होने किसी की हत्या के काम आयेगा | परन्तु नई मीडिया की सर्व सुलभ और

आसन पँहुच के कारण गलत लोगो के हाथ में पँहुच से रोक पाना संभव नही है | इसलिए यह जरुरी है कि लोग सचेतता के साथ इसका उपयोग करे और इस से होने वाले दुष्प्रभावों से अवगत हो |

आगे की राह : राजनितिक विचारक सी. डी. बर्न ने लोकतंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा था कि "कोई इसे इंकार नहीं कर सकता कि प्रतिनिधि संस्थाओ में कमियाँ हैं | लेकिन यह मुर्खता होगी कि यदि हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त होता है तो हम बैलगाड़ी पर चढ़ना शुरू कर दें |" नई मीडिया के सन्दर्भ में बिल्कुल यही बात सच है , क्योंकि न्यू मीडिया में भी कमियाँ हैं | परन्तु इसका साथ छोड़ देना नही , बल्कि इसके स्याह पक्ष बचते हुए इसका सदुपयोग करना बुध्दिमत्ता होगी | इसके दुष्प्रभावो को रोकने के निम्नलिखित उपाय हो सकते हैं -

- शिक्षा और जागरूकता : मीडिया साक्षरता व जागरूकता कार्यक्रम शुरू किये जा सकते हैं | जिस से जनता न्यू मीडिया पर चलने वाली सूचनाओं , खतरों , सावधानियों , जानकारियों को स्वयं विश्लेषित करने की क्षमता विकसित कर सकें |
- सकारात्मक सामग्री को बढ़ावा : इन्टरनेट पर समाजोपयोगी , राष्ट्रोपयोगी , व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले उचित सामग्री का प्रचार - प्रसार ज्यादा होना चाहिये | उचित और सार्थक सामग्री समाज में लोगो का ध्यान आकर्षित करके उन्हें नकारात्मकता से दूर रखने में सहायक हो सकती है |
- सूचना पर नियंत्रण : फर्जी खबर , दुष्प्रचार , अश्लील कंटेंट , संघर्ष को बढ़ावा देने वाले समाचार आदि पर अंकुश लगाने के लिए सरकार को कड़े कानून बनाने होगे | केवल कड़े कानूनों का निर्माण ही नहीं अपितु उनके कार्यान्वयन में भी तेजी लानी होगी | फर्जी खबर को फारवोर्ड करने वालों की भी जिम्मेदारी तय करनी होगी , जिसे आम जनमानस किसी भी खबर की सत्यता जाने बिना उसे न फैलायें |
- नागरिक भागीदारी : जनता को अपने स्तर पर जागरूक और सचेत होने की जरुरत है | जैसे - किसी भी न्यूज़ को फ़ैलाने से पूर्व से उसकी सत्यता जाँच लेना , संघर्ष बढ़ाने वाले कंटेंट को न फारवर्ड न करना आदि |

नई मीडिया का सबसे बड़ा आधार युवा वर्ग है , जो इसके अनेकों प्लेटफोर्म से जुड़ा है | आने वाले समय में बिना युवा भागीदारी के इसके दुष्प्रभावों को दूर नही किया जा सकता है , युवा वर्ग को स्वयं अपने स्तर पर , खुद को और दुसरों को इसके अवगुणों से बचा कर , देश को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी निभानी होगी |

: सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति , https://loksabhadocs.nic.in , accessed on 15/09/2024
2. न्यू मीडिया में हिंदी की वर्तमान स्थिति , https://rajbhasha.gov.in , accessed on 16/09/2024
3. वक्फ संशोधन बिल पर JPC को ईमेल .... , https://www.tv9hindi.com/india/waqf-amendment-bill-jpc-84-lakh-email-suggestions-no-qr-code-2833871.html , accessed on 19/09/2024
4. नया मीडिया क्या है ? .... , https://www-phoenix-edu.translate.goog/blog/what-is-new-media.html?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc , accessed on 18/09/2024
5. न्यू मीडिया , https://hju.ac.in/programme_5.html , accessed on 17/09/2024
6. खान , अहतिशाम अहमद , "न्यू मीडिया के आयाम और उसकी चुनौतियाँ " , इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल , वॉल्यूम 4 , इशू 5 , जून 2014
7. पचौरी , सुधीश , "नया मीडिया और नए मुद्दे" , वाणी प्रकाशन , दिल्ली , 2009
8. कुमार , मुकेश , " कसौटी पर मीडिया" , राज कमल प्रकाशन , दिल्ली , 2014
9. जोशी , शिवप्रसाद , जोशी , शालिनी , "नया मीडिया अध्ययन और अभ्यास" , पेंगुइन इंडिया , दिल्ली , 2015
10. कुमार , सुरेश , " ऑनलाइन मीडिया" , पियर्सन एजुकेशन इंडिया , दिल्ली , 2015
11. रानी , डॉ. संगीता , " सोशल मीडिया : संभावनाए और चुनौतियाँ" , श्री नटराज प्रकाशन , दिल्ली , 2023
12. सिंह , विजया , "नव मीडिया और भाषा" , प्रभात प्रकाशन , नयी दिल्ली , 2024
13. आज़म , इरफान ए , डिजिटल मीडिया (हैंडबुक) , किताबघर प्रकाशन , नयी दिल्ली , 2023
14. पद्दर , अल्ताफ हुसैन , " विकसित भारत @2047" , DOI: 10.13140/RG.2.2.28729.75367
15. फ्राइडमैन , हेर्शय एच. , फ्राइडमैन , लिंडा वेइसर , " द न्यू मीडिया टेक्नोलॉजीज : ओवरव्यू एंड रिसर्च फ्रेमवर्क" , एस.एस.आर.एन. इलेक्ट्रॉनिक जर्नल , अप्रैल 2008 , DOI: 10.2139/ssrn.1116771
16. निकोलेटा , सिअसुग्रास , " इम्पैक्ट ऑफ़ न्यू मीडिया ऑन सोसाइटी" , https://www.researchgate.net/publication/215489586
17. विकसित भारत 2047 : अर्थ , दृष्टि , उद्देश्य , https://www.nextias.com/ca/editorial-analysis/10-02-2024/idea-of-viksit-bharat , accessed on 19/09/2024

18. शॉ , बेबी संजीव , “ एक कदम विकसित भारत की ओर : एक - एक..... ”, ब्लूरोज पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड , नोएडा , 2023